International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications,
ISSN: 2319-7471, Volume 13 Issue 12, December 2024

प्रेमचंद के गोदान में सामाजिक. आर्थिक दृष्टि का अध्ययन करना।

अंजू लता[1], डॉ. लक्ष्मी देवी शर्मा[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर राजस्थान

सारांश

प्रेमचंद को बचपन से ही उपन्यास और लघुकथाएं पढ़ने का शौक था और बड़े होने के साथ-साथ यह शौक और गहरा होता गया। अपनी माँ की मृत्यु के बाद उन्हें बहुत कठिन स्कूली जीवन का सामना करना पड़ा। इसके अलावा पंद्रह वर्ष की अल्पायु में ही उनका विवाह एक कुत्सित स्त्री से कर दिया गया। द्वितीय श्रेणी में मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे अपनी कॉलेज की शिक्षा के लिए वाराणसी चले गए। प्रेमचंद ने अपना करियर चुनार के एक मिशनरी स्कूल में एक स्कूल शिक्षक के रूप में शुरू किया और उसके बाद उन्हें बहराइच के सरकारी स्कूल में सहायक शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। जब उनका कानपुर तबादला हुआ तब उनका लेखन कौशल ठीक से निखरा। उन्होंने अपना पहला उपन्यास उर्दू असरारे-माबिद (मंदिर का रहस्य) में लिखा था जो 1903 से 1905 तक "बनारस उर्दू साप्ताहिक" में एक आवधिक और एक एपिसोडिक धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ था। हालांकि यह उपन्यास अभी तक इसे एक मील का पत्थर साबित करने में सफल नहीं हो सका। इसने प्रेमचंद को उनके आगे के लेखन के लिए रास्ता साफ किया। इस उपन्यास ने प्रेमचंद को अपना पूरा ध्यान सामाजिक आर्थिक सरोकारों की ओर लगाने और समता में व्याप्त होने पर विवश कर दिया। धीरे-धीरे प्रेमचंद भारत में आम आदमी और देहाती लोगों की आवाज बन गए। उनकी क्रांतिकारी सोच ने उनकी लेखन शैली में एक महान और उल्लेखनीय परिवर्तन लाया।

मुख्य शब्दः उपन्यास, लघुकथाएं, धारावाहिक, क्रांतिकारी, लेखन शैली

परिचय

अंग्रेजी साहित्य में नव-शास्त्रीय युग में रिचर्डसन के पोमेला के प्रकाशन के साथ अंग्रेजी उपन्यासों की उत्पत्ति देखी गई, लेकिन 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20वीं सदी की शुरुआत में उपन्यास लेखन ने सार्वभौमिक ताकत हासिल की। उस काल तक उपन्यास लेखन दुनिया की अधिकांश भाषाओं और देशों में लोकप्रिय हो चुका था। उस समय, दो अलग-अलग देशों और संस्कृतियों से जुड़े दो उपन्यासकारों ने भारत में धनपत राय उपनाम मुंशी प्रेमचंद और रूस में मैक्सिम गोर्की ने अपनी उत्कृष्ट कृतियों गोदान और मदर के साथ दुनिया में उपन्यास लेखन का परचम लहराया। प्रेमचंद और गोर्की की भाषा और पृष्ठभूमि भले ही अलग-अलग हो, लेकिन उन्हें साहित्य के एक ही गुलदस्ते के दो अमर फूल माना जा सकता है। उनकी लेखन शैली और विषयगत प्राथमिकताओं में सामाजिक-आर्थिक चिंताओं का समावेश आसानी से देखा जा सकता है। हमारे मूल उपन्यासकार होने के नाते मुंशी प्रेमचंद की चर्चा और परिचय पहले होना चाहिए और फिर गोर्की का।

1.1 मुंशी प्रेमचंदः

एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार और लघु कथाकार के रूप में प्रसिद्ध मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी (यू.पी.) के पास लमही नामक गाँव में एक साधारण क्लर्क के परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री अजायब लाल राय एक कायस्थ और रूढ़िवादी हिंदू थे जो डाकघर में काम करते थे। जबकि प्रेमचंद की माँ एक साधारण महिला और एक सौम्य गृहिणी थीं। प्रेमचंद के बचपन में उनमें कोई असाधारण क्षमता नहीं थी, लेकिन सीखने के प्रति उनका झुकाव थोड़ा ध्यान देने योग्य था क्योंकि उन्होंने अपने गाँव में एक मुस्लिम "गुरु" से फ़ारसी और उर्दू भाषा सीखी थी। उन्हें अपने स्कूल और गाँव के रिकॉर्ड में धनपत राय कहा जाता था, लेकिन बाद में उन्होंने अपना उपनाम प्रेमचंद रख लिया। उनके बचपन में अचानक एक बड़ा झटका लगा जब उनकी माँ का निधन हो गया और दो साल बाद उनके पिता ने एक सौतेली माँ को दूसरी महिला से शादी करवा दी।

प्रेमचंद को बचपन से ही उपन्यास और कहानियाँ पढ़ने का शौक था और बड़े होने के साथ-साथ यह शौक और भी गहरा होता गया। अपनी माँ की मृत्यु के बाद उन्हें बहुत कठिन स्कूली जीवन का सामना करना पड़ा। इसके अलावा, पंद्रह वर्ष की कम उम्र में ही उनका विवाह एक बदमिजाज़ महिला से कर दिया गया। द्वितीय श्रेणी में मैट्रिक पास करने के बाद वे कॉलेज की पढ़ाई के लिए वाराणसी चले गए। प्रेमचंद ने चुनार के एक मिशनरी स्कूल में एक स्कूल शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया और उसके

बाद वे बहराइच के सरकारी स्कूल में सहायक शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। कानपुर स्थानांतरित होने पर उनकी लेखन कला में और निखार आया। उन्होंने अपना पहला उपन्यास उर्दू में लिखा जिसका नाम असरारे-मबीद (मंदिर का रहस्य) था जो 1903 से 1905 तक “बनारस उर्दू साप्ताहिक” में एक आवधिक और एक धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ। हालाँकि यह उपन्यास मील का पत्थर साबित नहीं हो सका, लेकिन इसने प्रेमचंद के आगे के लेखन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इस उपन्यास ने प्रेमचंद को सामाजिक आर्थिक चिंताओं और समानता में व्याप्त समानता पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर किया। धीरे-धीरे प्रेमचंद भारत में आम आदमी और देहातियों की आवाज़ बन गए। उनकी क्रांतिकारी सोच ने उनकी लेखन शैली में एक बड़ा और उल्लेखनीय बदलाव लाया। मुंशी प्रेमचंद ने अपने जीवन का कुछ समय महोबा में बिताया, जहाँ उन्हें 1909 में स्कूलों के उप-उप निरीक्षक के रूप में नियुक्त किया गया और उसके बाद वे 1916 में नॉर्मल स्कूल में शामिल होने के लिए गोरखपुर पहुँचे।

उन्होंने अपनी लघुकथाएँ यहीं लिखीं और उन्होंने अपनी लघुकथाओं में अपने मानवतावादी और न्यायपूर्ण दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयास किया। प्रेमचंद के लेखन के चरम काल में, भारत भारतीय राजनीति और स्वतंत्रता संग्राम के संक्रमणकालीन दौर से गुज़र रहा था, जिसने मुंशी प्रेमचंद जैसे भारतीय संवेदनशील लेखकों की कल्पनाशील भावना को पर्याप्त विषयवस्तु और प्रसारित किया, महात्मा गांधी भारतीय राजनीति में एक प्रमुख व्यक्ति बन गए थे, जबकि प्रेमचंद महात्मा गांधी के प्रशंसक और कांग्रेस जैसी समकालीन राष्ट्रीय पार्टियों के समर्थक बन गए थे। 1857 में स्वतंत्रता के लिए पहली लड़ाई ने भारत के लोगों को उनकी नींद से जगा दिया था क्योंकि भारत के लोग स्वतंत्रता के बारे में सोचने लगे थे। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय लोगों को दूसरे देशों की महान क्रांतियों और स्वतंत्रता संग्रामों के बारे में जानने का अवसर प्रदान किया। चूँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में अभी तक उचित शिक्षा प्रदान नहीं की जा रही थी, इसलिए अस्पृश्यता, कठोर जाति-व्यवस्था, सांप्रदायिक भावनाएँ और रूढ़िवादी जीवन शैली जैसी सामाजिक बुराइयाँ अभी भी लोगों को अपनी गिरफ़्त में ले रही थीं। प्रेमचंद एक समझदार और सक्रिय लेखक थे और उन्होंने भारतीय जीवन की सामाजिक समस्याओं और भारतीय किसानों की समस्याओं को चित्रित करना शुरू कर दिया।

प्रेमचंद पहले भारतीय उपन्यासकार थे जिन्होंने अपनी समस्या केंद्रित लेखनी की शुरुआत भारतीय किसानों की समस्याओं और स्थितियों को उजागर करने के लिए की थी। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से खुद को एक समाज सुधारक के रूप में साबित करने की कोशिश की। चूंकि वे एक प्रगतिशील लेखक और विचारक थे, इसलिए उन्होंने अपने उपन्यास लिखते समय खुद को पूरी तरह से सतर्क रखा कि उन पर किसी विशेष धर्म का समर्थक या किसी पंथ का आलोचक होने का आरोप न लगे। वे एक धर्मनिरपेक्ष लेखक थे क्योंकि उनके पात्र भारतीय समाज के सभी वर्ग और धर्म का प्रतिनिधित्व करते थे। मुंशी प्रेमचंद का महान उपन्यास सेवा सदन 1918 में अपने प्रकाशन के साथ ही प्रकाश में आया जिसमें उपन्यासकार ने मध्यवर्गीय जीवन का वास्तविक चित्रण किया है जो हमेशा संघर्षों और तनावों से भरा रहता है। उपन्यास भारतीय महिला समाज की रूढ़िवादिता को भी उजागर करता है। उपन्यासकार दहेज प्रथा, जबरन विवाह, बाल विवाह, पर्दा समस्या, विधवाओं की पीड़ा और वेश्याओं के दयनीय जीवन जैसी सामाजिक बुराइयों पर ध्यान केंद्रित करता है। सेवा सदन भी एक ऐसी स्त्री की पीड़ा का चित्रण है जिसे मजबूरी में वेश्या का जीवन स्वीकार करना पड़ता है। प्रेमचंद ने वेश्यावृत्ति और उसे प्रोत्साहित करने वाली सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला। यह उपन्यास वेश्यावृत्ति की बेहतरी के लिए क्रांतिकारी सुझावों से भरा है।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास कर्मभूमि में कई मौजूदा समस्याओं को व्यक्त किया है। कर्मभूमि में उन्होंने हरिजन नामक दलित समुदाय को दिखाया है जो सभी उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाता है और खुद को हड़ताल पर ले जाता है क्योंकि उन्हें मंदिरों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। प्रेमचंद ने अपने दोनों उपन्यासों रंगभूमि और कर्मभूमि में सत्य और अहिंसा की नीति की वकालत की है। प्रेमचंद का एक और प्रसिद्ध उपन्यास प्रेमाश्रम भारत में किसानों की खराब आर्थिक स्थिति को दर्शाता है और किसानों की दयनीय और दर्दनाक दुर्दशा पर ध्यान केंद्रित करता है। गांव के कुलीन लोगों और साहूकारों द्वारा गरीबों के शोषण को गोदान, कर्मभूमि और प्रेमाश्रम में पूरा ध्यान और आकर्षण मिला, जबकि प्रेमचंद ने अपने उपन्यास कायाकल्प में हिंदू और मुसलमानों के सांप्रदायिक झगड़ों को चित्रित करने में अपना पूरा ध्यान लगाया। प्रेमचंद के उपन्यासों में उन्हें एक सुधारवादी के रूप में आसानी से देखा जा सकता है क्योंकि उन्होंने व्यक्ति की गरिमा को बनाए रखा है, चाहे उसकी स्थिति कुछ भी हो। प्रोफेसर आई.डी. शर्मा का मानना है कि “उनके उपन्यासों का एक सामाजिक उद्देश्य और प्रतिबद्धता है। सवा सदन में गजधन अपनी पत्नी सुमन से कहता है

कि वर्तमान समय में केवल निस्वार्थ सेवा ही मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जा सकती है।“ प्रतिज्ञा भी प्रेमचंद का एक उल्लेखनीय उपन्यास है जिसमें विधवाओं की दयनीय और सोचनीय स्थिति को चित्रित किया गया है। प्रतिज्ञा इस बात की गवाह है कि व्यवस्था की बुद्धिहीन रूढ़िवादिता के कारण एक विधवा को इस हृदयहीन समाज का सामना कैसे करना पड़ता है। इसके अलावा अगर विधवा को कोई संतान न मिले तो समाज और भी निर्दयी हो जाता है। उपन्यासकार प्रेमचंद ने 1923 में प्रसिद्ध उपन्यास निर्मला लिखकर अपनी संवेदनशीलता की पराकाष्ठा को छुआ था। उन्होंने समकालीन हिंदू समाज के खोखलेपन को उजागर करने का प्रयास किया है, जहां एक युवा लड़की की भावनाओं को सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों के आगे महत्व नहीं दिया जा सकता। पिता की मृत्यु के बाद निर्मला की जवानी दांव पर लग जाती है, क्योंकि उसकी शादी एक अधेड़ विधुर से कर दी जाती है, जिसकी पहली पत्नी से पहले से ही बड़े बच्चे हैं। प्रेमचंद के महान उपन्यास गबन में लालच के खतरे और बुरे परिणामों को उजागर किया गया है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने रामनाथ के वास्तविक संघर्षशील व्यक्तित्व का चित्रण किया है, जो अपनी पत्नी की बेईमान मांगों के कारण कर्ज में फंस गया है। उसकी पत्नी जालपा उसे अवैध भूमिका निभाने के लिए मजबूर करती है, क्योंकि वह अधिक सोना और गहने चाहती है। वह एक आरामदायक और शानदार जीवन जीने की शौकीन है। रामनाथ केंद्रीय चरित्र है, जो गलत तरीकों से पैसा कमाने का शिकार बन जाता है। प्रेमचंद अपनी महान कृति लिखते समय अपने पूरे उत्कर्ष पर पहुंचे। 1936 में प्रकाशित गोदान उनकी साहित्यिक प्रतिभा का शिखर बन गया। उपन्यासकार ने अपना ध्यान गरीब मजदूरों और किसानों की समस्याओं पर केन्द्रित

किया है। गोदान लिखने में उन्हें तीन साल लगे। भारतीय किसानों की पीड़ा को मुख्य पात्र होरी ने दर्शाया है, जो दर्शाता है कि किसान सदियों से अत्याचार करते आ रहे थे। गोदान भारतीय किसानों की गरीबी और कष्टों के बावजूद उनके दृढ़ निश्चय और सांस्कृतिक और सामाजिक शुद्धता का भी गवाह है। प्रेमचंद आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखकों में से एक हैं। उनके लिए उपन्यास एक सामाजिक और ऐतिहासिक दस्तावेज है। एक लेखक और दूरदर्शी के रूप में प्रेमचंद जीवन का बहुत बारीकी से अध्ययन करते हैं और उन्होंने खुद भारत में मध्य वर्ग की पीड़ा और समस्याओं को साझा किया है। वे मध्य वर्ग की समस्या का वस्तुपरक विश्लेषण करते हैं और वे केवल वर्णन से संतुष्ट नहीं होते। उनके लिए साहित्य की एक सामाजिक प्रतिबद्धता होती है और एक लेखक को सामाजिक बुराइयों को उजागर करके उसे सुधारना चाहिए। उनका इरादा उन समस्याओं को मिटाना है, जिन्होंने समाज के निम्न और मध्यम वर्ग के जीवन को खा लिया है।

2. उद्देश्य / अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:
1. प्रेमचंद के गोदान में सामाजिक-आर्थिक दृष्टि का अध्ययन करना।
2. मैक्सिम गोर्की की माँ में सामाजिक-आर्थिक दृष्टि का अध्ययन करना।

3. शोध कार्यप्रणाली

अनुसंधान पद्धति अनुसंधान समस्या को व्यवस्थित रूप से हल करने का एक तरीका है। जिसे वैज्ञानिक रूप से शोध कैसे किया जायेगा, इसका अध्ययन करने के लिए विज्ञान के रूप में समझा जायेगा। शोध अध्ययन वर्तमान शोध, उद्देश्यों और अध्ययन की प्रक्रियाओं को संचालित करने के लिए उपयोग की जाने वाली पद्धति और प्रक्रिया पर प्रकाश डालेगा। अनुसंधान किसी भी प्रकार की अस्पष्टता को कम करता है और परिणाम में स्पष्टता लाता है और इस प्रकार अध्ययन के लिए अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों की योजना बनाने में सहायक हो जाता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य के विशेष संदर्भ में प्रेमचंद के गोदान और मैक्सिम गोर्की की माँ का तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित होगा।

अनुसंधान प्रकार

विश्लेषण का उद्देश्य अध्ययन में डेटा के सार को परिभाषित करना होगा। डेटा की प्रकृति को देखते हुए, वर्तमान में चल रहे कार्य में गुणात्मक सह मात्रात्मक पहलू होंगे, लेकिन मुख्य रूप से पहलू में मात्रात्मकता होगी, क्योंकि इस विश्लेषण के अधिकांश निष्कर्ष मात्रात्मक उपायों पर केंद्रित होंगे। शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के परिणामों पर अध्ययन किया जायेगा, जिसमें गुणात्मक विश्लेषण को भी परिभाषित किया जायेगा।

नमूना डिजाइन

शोध कार्य के कुछ मामलों में, पूरे शोध का विश्लेषण करना लगभग असंभव होगा; इसलिए शोध नमूने का उपयोग करना ही एकमात्र विकल्प होगा। वर्तमान शोध का एक ही उद्देश्य होगा, शोध कार्य के विश्लेषण का नमूना तय करने की प्रक्रिया, प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य के विशेष संदर्भ में प्रेमचंद के गोदान और मैक्सिम गोर्की की माँ का तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित होगा।

आंकड़ा संग्रहण

डेटा संग्रह अनुसंधान गतिविधियों के लिए पूर्ण और सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए स्रोतों से डेटा एकत्र करने और मापने का व्यवस्थित तरीका होगा। अध्ययन के सभी क्षेत्रों में तथ्य संग्रह घटक शरीर और सामाजिक विज्ञान, मानविकी और निगमों पर आधारित होगा। यह शोधकर्ता और विश्लेषकों द्वारा एकत्रित की जाने वाली जानकारी पर आधारित होगा। जोकि शोध विषय वस्तु के दृष्टिकोण के विपरीत, सही और सच्चे क्रम को बनाए रखने का मूल्य उद्देश्य होगा। अनुसंधान की विश्वसनीयता को बनाए रखने और उत्कृष्ट परिणामों और उनके निष्कर्षों को सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान डेटा संग्रह आवश्यक होगा। अध्ययन के लक्ष्यों कों प्राप्त करने के लिए द्वितीयक आपूर्ति डेटा संग्रह के मूल्यवान द्वारा होगा।

4. परिणाम एवं चर्चा

अधिकांश लेखक और कलाकार आमतौर पर शासकों की चापलूसी करने और सत्ता की कुर्सियों की ज़रूरतों और स्थिति को संतुष्ट करने में व्यस्त दिखाई देते हैं। बिहारी और मुंशी प्रेमचंद जैसे लेखक और कवि शायद ही हमें मिलें। जैसा कि बिहारी ने मिर्जा राजा जयसिंह को यह कहकर चेतावनी दी थी कि वह अपनी नवविवाहिता पत्नी के प्रति अपने गहरे झुकाव के खिलाफ़ है।

"न पराग न मधुर मधु न विकास एही कल
अली कली हे सो बंध्यो आगे कवन हवाल।"

इसी तरह मुंशी प्रेमचंद ने अपने अमर उपन्यास गोदान के माध्यम से सामंतों और जमीदारों को दलितों और गरीबों के शोषण के खिलाफ़ चेतावनी दी, जो भारत के ग्रामीण जीवन के साथ-साथ शहरी जीवन का भी प्रतिनिधित्व करता है। यही कारण है कि डॉ. गंगा प्रसाद ने इसे "भारतीय ग्रामीण जीवन की समस्याओं का महाकाव्य और गीता" कहा है। जब किसी उपन्यास को महाकाव्य कहा जाता है तो सबसे पहले उपन्यास के आकार और आकार तथा उसके पात्रों की विविधता पर ध्यान दिया जाता है, गोदान के साथ भी यही बात है।

लेखक का कर्तव्य है कि वह स्वयं को सुधारक और दूरदर्शी सिद्ध करे। एक सच्चा साहित्यकार हमेशा मौजूदा परिस्थितियों का अध्ययन और परीक्षण करता है और उनका अन्वेषण और विश्लेषण करके लोगों को सही मार्ग दिखाता है, ताकि वे जीवन जीना सीख सकें। वह तथ्यों पर प्रकाश डालता है और बताता है कि लोग कहाँ गलत हैं और उसका समाधान क्या है। गोदान एक चिकित्सा संबंधी संग्रह प्रतीत होता है, जिसमें भारतीय समाज की सभी प्रकार की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का समाधान समाहित है।

जब अमर उपन्यास गोदान लिखा जाने वाला था, उस समय हिंदी उपन्यास लेखन अभी भी एक अधूरी कल्पना थी। उन दिनों उपन्यास लेखन में आमतौर पर केवल रोमांटिक विषयों पर ही चर्चा होती थी। गोदान के लेखन के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने भारतीय साहित्यिक संवेदनाओं को सामाजिक और आर्थिक दोनों तरह की एक नई तरह की जागरूकता प्रदान की। गोदान में एक ओर जहाँ मुंशी प्रेमचंद एक आदर्शवादी प्रतीत होते हैं, जो सपनों का जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर वे एक यथार्थवादी भी प्रतीत होते हैं जो खुद को स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

गोदान को हिंदी साहित्य के कैनवास पर एक प्रभावी और सशक्त चित्रण के रूप में और भारतीय साहित्य के सबसे महान उपन्यासों में से एक के रूप में सराहा जाता है। गोदान भारतीय ग्रामीण समाज की सबसे यथार्थवादी व्याख्या है। यह उपन्यास भारतीय किसानों और मजदूरों की गरीबी, भुखमरी, खराब स्वास्थ्य, दुख, मृत्यु और अपमान जैसी समस्याओं का चित्रण है। होरी भारतीय किसान वर्ग का सच्चा प्रतिनिधि है। यह देखा जाता है कि उसके जीवन में हर स्तर पर त्रासदी को बल मिलता है और वह तीव्र होती जाती है। होरी एक किसान है जो बहुत ही सरल है और परंपराओं का सम्मान करता है। वह एक ऐसा गरीब और आदर्शवादी व्यक्ति है जो कभी भी समाज या धार्मिक मान्यताओं और धार्मिक संस्थाओं के एजेंटों के खिलाफ जाने की कल्पना भी नहीं कर सकता। परिणामस्वरूप वह साहूकारों के अन्याय और शोषण का शिकार बन जाता है।

यहां तक कि उपन्यास गोदान का शीर्षक भी मुंशी प्रेमचंद ने कथा के अंत में होरी की त्रासदी को मुखर करने और उसे बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया है। पाठक होरी के दुख, दर्द और लाचारी की ओर सहानुभूतिपूर्वक आकर्षित होते हैं और वे भारी मन से उपन्यास के करीब आते हैं। एक ऐसा पात्र जो एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण करता है जो जीवन भर गाय पालने के बारे में सोचता रहा, अपने अंतिम क्षणों में एक ब्राह्मण को गाय नहीं दे सकता।

"गोदान एक संघर्षशील लोगों की कहानी भी है, जो भूखे और आधे भूखे हैं, फिर भी अपने युग की वास्तविक भावना में इच्छुक और आशावादी हैं। वे गहरी समझ के साथ उनके अंधेरे जीवन की त्रासदी और करुणता, उनकी दुर्लभ मुस्कुराहट और निरंतर दुख, उनकी निराशा और आशाओं को चित्रित करते हैं।"

समाजवाद और व्यक्तिवाद दोनों ही ऐसे दायित्व हैं, जिनके साथ मुंशी प्रेमचंद ने काम किया। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक उद्देश्य दिखाई देता है। ऐसा माना जाता है कि गोदान में मुंशी प्रेमचंद ने यह साबित कर दिया है कि समाज केवल युग और उसके लोगों के स्वभाव का प्रतिबिंब नहीं है। यह उनके कार्यों और आचरण को परखने का एक पैमाना भी है। गोदान के माध्यम से उपन्यासकार ने यह संदेश देने की कोशिश की है कि सामाजिक व्यवस्था में बदलाव ही व्यक्तियों के जीवन को बदलने के लिए पर्याप्त है। गोदान में शायद ही कोई ऐसा पात्र हो जो परिस्थितियों से लड़ने के लिए खड़ा दिखाई देता हो। गोदान में कभी-कभी मुंशी प्रेमचंद अरस्तू के आदर्श दुखांत नायक के सिद्धांत का अनुसरण करते हुए दुखद दोष (हमार्टिया) पर ध्यान केंद्रित करते हुए दिखाई देते हैं, खासकर तब जब वे अपने पात्रों की कमजोरियों और भारतीय समाज की बुराइयों को उजागर करना चाहते हैं। उनके अधिकांश पात्र हर तरह के शोषण के शिकार होते हैं और वे व्यवस्था द्वारा निर्धारित शर्तों को स्वीकार करते हैं।

इन पात्रों का भाग्य में दृढ़ और अडिग विश्वास होता है और यह विश्वास उन्हें धाराओं और तरंगों के साथ बहने देता है। होरी, खन्ना, रायसाहब, मेहता, मातादीन और दातादीन जैसे पात्रों की एक लंबी सूची है जो कुछ मूल्यों और आवाज़ों के प्रतीक और व्यक्तित्व हैं। उपन्यासकार ने ऐसे पात्रों का चयन भारतीय पृष्ठभूमि में पारंपरिक मूल्यों और विश्वासों के साथ किया है। इन पात्रों के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास के विषय और कथानक को यथार्थवादी बनाने के लिए अपनी गहरी बुद्धि का इस्तेमाल किया है। इन गुणों के कारण एक प्रसिद्ध समाचार पत्र 'द नागपुर टाइम्स' ने टिप्पणी की, "किसी भी भारतीय को यह उपन्यास नहीं छोड़ना चाहिए, जिसे प्रेमचंद ने आंसुओं के साथ लिखा था।" मुल्क राज आनंद ने भी यही विचार व्यक्त किए हैं, वे कहते हैं, "चाकू की तरह घबराए हुए, उन्होंने अपने अंतिम उपन्यास गोदान में पाखंड और झूठ को साफ-साफ काट दिया है, ताकि उनकी किसी भी पिछली किताब में शायद ही कभी देखे गए विपरीत चरित्र सामने आएं, जो भविष्य के नवीनीकरण में अपने साहसी विश्वास के साथ अभी भी सामंती गांव की अराजकता को पार कर जाते हैं।"उपन्यास का कथानक अच्छी तरह से तैयार किया गया है। यह एक गोल कथानक है, जिसमें कोई ढीला छोर नहीं है। कोई रहस्य नहीं बनाया गया है और पाठकों की कल्पना के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा गया है। गोदान उपन्यास के आरंभ में हम पाते हैं कि होरी अपने गृहस्थी और कृषि संबंधी कार्यों में व्यस्त है, जबकि उसकी पत्नी धनिया बहुत सहयोगी भूमिका निभाती है और घर के साथ-साथ खेतों में भी उसके काम में हाथ बंटाती है।

धनिया इतनी कूटनीतिज्ञ नहीं थी। उसका विचार था कि जब उन्होंने भी ज़मीदार के खेत जोते हैं, तो वह अधिक से अधिक कर ले सकता है। वे क्यों उसकी चापलूसी करें या उसका मजाक उड़ाएँ? अपने विवाहित जीवन के इन बीस वर्षों में उसे एक बात तो समझ में आ ही गई थी कि वह चाहे एक-एक पैसा क्यों न बचाए, चाहे वह ठीक से खाना-पीना या कपड़े पहनकर कंजूसी से जीवन क्यों न जिए, एक-एक पैसा इकट्ठा करके भी ज़मीदार का कर चुकाना असंभव है। फिर भी वह कभी हार नहीं मानती थी और इस मुद्दे पर पति-पत्नी में हर दूसरे दिन बहस होती रहती थी।"

होरी और धनिया कर्ज के बोझ तले दबे हुए हैं। वे बहुत मेहनत करते हैं, लेकिन कर्ज चुकाने में असमर्थ हैं। होरी के परिवार में पाँच सदस्य हैं, जिसमें वह और उसकी पत्नी, उनका बेटा गोबर और सोना और रूपा नाम की दो बेटियाँ शामिल हैं। सोना और रूपा गाँव की अन्य लड़कियों की तरह स्वाभाविक रूप से सुंदर हैं, लेकिन गरीबी और शोषण ने उन्हें असभ्य और साधारण दिखने वाली लड़कियाँ बना दिया है। होरी का पूरा परिवार कर्ज मुक्त जीवन के लिए बेचैन है, जबकि साहूकार उन्हें तंग नहीं करते।

जब भी होरी थके हुए कदमों से अपने खेतों की ओर जाता है और पास के खेत में अच्छी फसल देखता है, तो उसका दिल दुख से भर जाता है क्योंकि उसके पास बहुत कम ज़मीन है क्योंकि उसका संयुक्त परिवार विभाजित हो गया है और परिणामस्वरूप यह छोटा सा खेत उसके जैसे बड़े परिवार के लिए अपर्याप्त साबित होता है। होरी की एकमात्र इच्छा एक ऐसी गाय का मालिक होना है जो खूब दूध दे। एक दिन बाहर काम करते समय होरी ने भोला को अपनी गायों के झुंड के साथ उस तरफ आते देखा। होरी की माँग और इच्छा पर, भोला उसे उधार के आधार पर एक गाय देने के लिए सहमत हो जाता है। होरी को गाय पालने का विचार आता है और वह गाय के सहारे एक आलीशान जिंदगी की कल्पना करने लगता है और बहुत खुश होता है।

महान उपन्यास गोदान में पाठक बहुत जल्दी ही उपन्यास के दूसरे कथानक की ओर चले जाते हैं, जहां एक महत्वपूर्ण पात्र रायसाहब विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में व्यस्त दिखाई देता है। होरी के गांव का नाम बेलारी है, जबकि रायसाहब सेमरी गांव में रहते हैं, जो बेलारी से मुश्किल से पांच मील दूर है। स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी और राष्ट्रवाद की भावना के कारण रायसाहब पूरे क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय व्यक्ति बन गए हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे जेल भी गए थे। धीरे-धीरे रायसाहब के विचार बदल गए और वे शासकों के साथ अच्छे संबंध बनाने में विश्वास करने लगे। पत्नी की दुखद मृत्यु के बाद भी रायसाहब खुद को व्यस्त रखते हैं। एक दिन रायसाहब होरी को अपने संभावित घर में उत्सव के लिए आमंत्रित करते हैं और दोनों समसामयिक मुद्दों पर अच्छी चर्चा करते हैं।

होरी का बेटा गोबर विद्रोही स्वभाव और संवेदनशील सोच वाला व्यक्ति है। होरी को अपने बेटे के शोषण और व्यवस्था के खिलाफ उसके आक्रोश और विद्रोह की भावना के बारे में अच्छी तरह से पता है। होरी के भाई अभी भी उसके प्रति बहुत सम्मान दिखाते हैं, हालाँकि वे अलग-अलग घरों में रहते हैं। गोबर वर्ग समानता में विश्वास करता है, वह कहता हैः

गोबर ने इसका पुरजोर विरोध किया- यह सब कोरी अफवाह है। हम एक-एक दाने के लिए मोहताज हैं, हमारे पास ढंग के कपड़े नहीं हैं, फटे-पुराने कपड़ों से काम चलाते हैं, दिनभर पसीना बहाते हैं, फिर भी अपना पेट नहीं भर पाते। वह क्या जानता है? वह ऐशो-आराम की जिंदगी जीता है और उसके पीछे-पीछे चलने वाले लोग हैं। वह आलीशान जिंदगी जीता है, हजारों आदमियों पर राज करता है, मुलायम से मुलायम गद्दों पर बैठता है। वह धन-संपत्ति भले ही न जुटा पाए, लेकिन उसे सारी सुख-सुविधाएं मिलती हैं। और किस लिए धन चाहिए? तो क्या तुम समझते हो कि हम और वे बराबर हैं? भगवान ने सबको बराबर बनाया है। ऐसा नहीं है बेटा। भगवान ने ही मनुष्यों में भेद पैदा किया है। बड़ी तपस्या के बाद ही उचित मिलता है। वह पिछले जन्म के पुण्य कर्मों का फल भोग रहा है। हमारे नाम पर कोई पुण्य नहीं है, तो क्या मिलेगा? ये सब सिद्धांत खोखले हैं और केवल दिल को तसल्ली देने के लिए हैं। भगवान भगवान ने सबको एक समान बनाया है। इस दुनिया में जिसके पास ताकत है, वह गरीबों को मजबूर करके बड़ा आदमी बन जाता है।"

पूरा परिवार बहुत खुश है और यह परिवार के लिए उत्सव का समय है क्योंकि होरी घर में गाय लेकर आया है। परिवार के सभी सदस्य गाय की पूजा करते हैं और उसका स्वागत करते हैं क्योंकि उसे देवी का अवतार माना जाता है। उनका मानना है कि गाय परिवार में समृद्धि लाती है।)

निष्कर्ष

अतीत और भविष्य की वास्तविकताओं के बीच साहित्य का एक अनूठा स्थान होता है। साहित्य और उसका उद्देश्य तथा साहित्यिक उद्देश्य की पूर्ति के तरीकों की समानताओं ने मुंशी प्रेमचंद और मैक्सिम गोर्की को एक ही मार्ग का अनुयायी बनाया। इस समानता ने उन्हें साहित्य को अपना हथियार और साधन बनाने के लिए प्रेरित किया। इन दोनों उपन्यासकारों ने साहित्यकारों की पूर्ण निष्पक्षता को नकार दिया और स्वीकार किया कि कलमकारों का कर्तव्य समाज में सच्चाई और ईमानदारी का आह्वान करना है। प्रेमचंद और गोर्की दोनों का मानना था कि लेखकों को मानव और मानवीय लक्ष्यों की सेवा करनी चाहिए ताकि समाज के लोग अपनी सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं को महसूस कर सकें।

गोर्की और प्रेमचंद सच्चे अर्थों में मानवतावादी लेखक थे। अपनी मानवीय भावनाओं के साथ वे अपने देशों के लोगों की सामाजिक-आर्थिक दुर्दशा को चित्रित करने और उजागर करने में सफल रहे। अपने बचपन के कड़वे अनुभवों ने उन्हें एहसास कराया था कि उनके आस-पास कुछ ऐसी चीजें थीं जो वहाँ नहीं होनी चाहिए थीं। गोर्की और प्रेमचंद दोनों ने पाया कि उनके देशों में अन्याय, शोषण, यातना, दर्द, पीड़ा, अज्ञानता, कर्मकांड और अंधविश्वास के कारण आम लोगों के लिए जीवन एक सजा बन गया था। प्रेमचंद के गोदान और गोर्की की माँ इन दोनों उपन्यासकारों की असली शिल्पकला के गवाह हैं। अपने महान उपन्यास माँ के माध्यम से मैक्सिम गोर्की ने रूसी गद्य साहित्य को एक नया मोड़ दिया। उन्होंने समाजवाद को अपना आदर्श बनाया और इस समाजवादी यथार्थवाद को साहित्य में लागू किया। उन्होंने समाजवाद को अन्याय, शोषण और अत्याचार को दूर करने का एक साधन बनाया। दूसरी ओर मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी और उर्दू साहित्य को वास्तविक जीवन से जोड़ने की कोशिश की।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1]. एलन, रिचर्ड, और हरीश त्रिवेदी, संपादक. साहित्य और राष्ट्रः ब्रिटेन और भारत, 1800 से 1990 तक। लंदनः रूटलेज इन एसोसिएशन विद द ओपन यूनिवर्सिटी, 2000. प्रिंट।

[2]. अप्पिया, क्वामे एंथनी। “थिक ट्रांसलेशन।” कैलालू 16.4 (1993)◌ः 808-19। श्रेज्व्त्। वेब। 19 फरवरी 2009। पुनर्मुद्रित अनुवाद अध्ययन रीडर, 2000। 417-29। प्रिंट।

[3]. आप्टे, वामन शिवराम। संस्कृत-हिंदी कोष। दिल्ली और वाराणसीः भारतीय विद्या प्रकाशन, 1999। प्रिंट।

[4]. एप्टर, एमिली। “ऑन ट्रांसलेशन इन ए ग्लोबल मार्केट।” पब्लिक कल्चर 13.1 (2001)◌ः 1द12। प्रोजेक्ट म्यूज़। वेब। 6 मार्च 2009।

[5]. असद, तलत। “ब्रिटिश सामाजिक नृविज्ञान में सांस्कृतिक अनुवाद की अवधारणा।” लेखन संस्कृतिः नृवंशविज्ञान की कविता और राजनीति। संपादक जे. क्लिफोर्ड और जी. ई. मार्कस। बर्कले और लॉस एंजिल्सः कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, 1986. 141द64. प्रिंट।

[6]. बेकर, मोना। “पहले संस्करण का परिचय।” रूटलेज इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज। संपादक मोना बेकर और गैब्रिएला सालदान्हा। दूसरा संस्करण। लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज, 2009। चौदह-नौ। प्रिंट। --- और गैब्रिएला सालदान्हा। “दूसरे संस्करण का परिचय।” रूटलेज इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज। दूसरा संस्करण। लंदनः रूटलेज, 2009। बीस-बीस। प्रिंट।

[7]. बख्तिन, एम. एम. द डायलॉगिक इमेजिनेशनः फोर एसेज। संपादक माइकल होलक्विस्ट। अनुवादक कैरिल इमर्सन और माइकल होलक्विस्ट। ऑस्टिनः टेक्सास विश्वविद्यालय, 1981। प्रिंट।

[8]. बैसनेट, सुसान। अनुवाद अध्ययन। तीसरा संस्करण। लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज, 2002. प्रिंट। और हरीश त्रिवेदी, संपादक। उत्तर-औपनिवेशिक अनुवादः सिद्धांत और व्यवहार। लंदनः रूटलेज, 1999. प्रिंट।

[9]. बेंडर, अर्नेस्ट। “समीक्षाः गाय का उपहार। प्रेमचंद द्वारा हिंदी उपन्यास, गोदान का अनुवाद।” जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी 91.1 (1971)◌ः162। श्रेज्व्त्। वेब। 3 मई 2009।

[10]. बेंजामिन, वाल्टर। “अनुवादक का कार्यः बौडेलेयर के टैब्लॉक्स पेरिसियन्स के अनुवाद का परिचय।” ट्रांस। हैरी ज़ोहन। अनुवाद अध्ययन रीडर। संपादक। लॉरेंस वेनुटी। लंदनः रूटलेज, 2000। 15-25। प्रिंट।

[11]. बर्मन, एंटोनी। “अनुवाद और विदेशियों के परीक्षण।” ट्रांस। लॉरेंस वेनुटी। अनुवाद अध्ययन रीडर। एड. लॉरेंस वेनुटी. लंदनः रूटलेज, 2000. 284-97. प्रिंट.

[12]. बोग्स, कोलेन ग्लेनी. “मार्गरेट फुलर का अमेरिकी अनुवाद.” अमेरिकी साहित्य 76.1 (2004)◌ः 31-58. प्रोजेक्ट म्यूज़. वेब. 5 मार्च 2009.

[13]. ब्रिग्स, केट. “अनुवाद और लिपोग्राम.” पैराग्राफ 29.3 (2006)◌ः 43-54. प्रोजेक्ट म्यूज़. वेब. 3 जून 2009.

[14]. ब्रिसेट, एनी. अनुवाद की एक सामाजिक आलोचनाः क्यूबेक में रंगमंच और भिन्नता, 1968-1988. अनुवादक. रोज़लिंड गिल और रोजर गैनन. टोरंटोः टोरंटो विश्वविद्यालय पी, 1996. प्रिंट.

[15]. बोर्जेस, जॉर्ज लुइस। “द थाउज़ेंड एंड वन नाइट्स के अनुवादक।” अनुवादक एस्तेर एलन। द ट्रांसलेशन स्टडीज रीडर। एड. लॉरेंस वेनुटी। लंदनः रूटलेज, 2000. 34- 48. प्रिंट।

[16]. कैमिनेड, मोनिक, और एंथनी पिम। “अनुवादक-प्रशिक्षण संस्थान।” रूटलेज इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज। एड. मोना बेकर। पहला संस्करण। लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज, 1998◌ः 280-85। प्रिंट।